Project Sheet Index

Name Ranjeeta D/O mr. Himtu. Class B.A IInd sem.

Roll No. ______ Subject Geography Assignment.

S. No.	PARTICULARS	Page	Date	Remarks
1	पर्यावरण का अर्थ, पर्यावरण ह्रास	1	05/07/20	
2	वैज्ञानिक तकनिकी के कारण ह्रास	1	"	
3	जंगलो की कटाई के कारण ह्रास	2	"	
4	बढती जनसंख्या के कारण	2-3	"	
5	वाहनो की बढती संख्या, प्लास्टिका			
	का उपयोग	4	"	
6	प्रदूषण का अर्थ, वायु प्रदूषण,			08/10
	जल प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, ध्वनि			
	प्रदूषण, प्रकाश प्रदूषण,	6-11	"	
7	शहरो में प्रदूषण, गांव में			
	प्रदूषण	13	"	
8	पर्यावरण के निवारण में मानव			
	की भूमिका	13-14	"	

GCH GANPATI COPY HOUSE

STAR Genius notebook

बेटी बचाओ बेटी पढाओ

● Eco Friendly Paper ● High Brightness ● Better Designs
● Economical Prices ● Antiageing ● Premium Look

MRP. 25/-
Code : 510
Size : 210 x 297 mm (Aprox)

Product Name : Plain

TOPIC →

पर्यावरण ह्रास के कारण व निवारण मे मानव की भूमिका

पर्यावरण का अर्थ →

पर्यावरण शब्द का निर्माण दो शब्दो से हुआ हैं। "परि" जो हमारे चारो ओर हैं "आवरण" जो हमें चारो ओर से घेरे हुए हैं अर्थात पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ होता है चारो ओर हुए से घेरे हुए। पर्यावरण उन सभी भौतिक रसायनिक एवं जैविक कारकों का समष्टिगत एक इकाई है जो किसी जीवधारी अथवा परितंत्रीय आबादी को प्रभावित करते हैं। तथा उनके रूप, जीवन और जीविता को तय करते है पर्यावरण वह है जो कि प्रत्येक जीव के साथ जुड़ा हुआ है हमारे चारो तरफ वह हमेशा व्याप्त होता हैं।

पर्यावरण ह्रास :- प्रकृति प्रदत्त हमें बहुत सारी चीजें संसाधन आदि प्राप्त है लेकिन मानव अनंत आवश्यकता के कारण वह प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ करता है। जिससे पर्यावरण ह्रास में वृद्धि हो रही हैं।

वैज्ञानिक तकनीकी के कारण ह्रास ⇒ प्रतिदिन विज्ञान के नये नवचारों से प्रकृति में मानवीय हस्तक्षेप की बढ़ोतरी हो रही है। विज्ञान के क्षेत्र में असीमित प्रगति तथा नए आविष्कारो की स्पर्धा के कारण आज प्रकृति पर पूर्णतह विजय प्राप्त करना चाहता है। इस कारण प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया है, प्रौद्योगिकी दोनो

पड़ते है । वायु प्रदूषण, जल, प्रदूषण, और ध्वनि प्रदूषण आधुनिक तकनिक का उपयोग करने के कारण नये रोग बढ़ गये है प्रोद्योगिकी के कारण नये रोग फैल रहे है । तकनीकी क्रांति के कारण प्राकृतिक संसाधनो दुलर्भ होते जाते है ।

वैज्ञानिक तकनीको ने हमारी दुनियाँ को दो तरीको से नुकसान पहुँचाता है । प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनो की कमी वायु, जल, गर्मी, ध्वनि प्रदूषण सभी प्रौद्योगिकी के कारण उत्पन्न होता है प्रदूषण ।

जंगलो की कटाई के कारण ह्रास :

वनो की अत्याधिक कटाई के कारण नादियो में बाढ आ रही है । सड़क निर्माण व फैक्ट्रियो के कारण पर्यावरण का बहुत अत्यधिक ह्रास हो रहा है, पर्यावरण के ह्रास में सबसे महत्वपूर्ण दो कारक होतो है ।

1. **सड़क निर्माण**
2. **फैक्ट्रिया निर्माण**

बढती जनसंख्या के कारण ह्रास →

1. कृषि भूमि पर अत्याधिक दबाव ।
2. कृषि भूमि पर अत्याधिक दबाव ।
3. प्राकृतिक संसाधनो का शोषण ।
4. प्रति व्यक्ति आय ।
5. बेरोजगारी में वृद्धि ।

Page : 3
Date :

6. जीवन स्तर में गिरावट
7. पर्यावरण प्रदूषण
8. ध्वनि प्रदूषण
9. हवा प्रदूषण
10. जल प्रदूषण आदि ।

बढ़ती जनसंख्या के कारण पर्यावरण इतना प्रदूषित हो रहा है जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। ~~बि~~ संसाधनों की कमी होने के कारण भुखमरी फैल रही है भारत में जनसंख्या घनत्व अलग-अलग स्थानों पर भिन्न रूप में दिखाई देता है भिन्न से यहां पर यह आशय है कि कम घनत्व वाले क्षेत्र में अधिक जनसंख्या निवास करती है और अधिक घनत्व वाले क्षेत्र में कम जनसंख्या निवास करती है इसलिए जिस क्षेत्र में ज्यादा जनसंख्या होगी उस क्षेत्र में ज्यादा गंदगी होगी और जिस क्षेत्र में कम जनसंख्या होगी वहां पर कम गंदगी होगी ।

वाहनो की बढती संख्या द्वारा ह्रास → बढती जनसंख्या के कारण व्यक्तियो के पास निजी वाहनो की संख्या अधिक हो रही है वाहनो से दमघोटू गैस निकलती रहती है ये गैस न ही पर्यावरण के लिए अच्छा है और न ही मनुष्यो के लिए।

- वाहनो का प्रदूषण पर्यावरण में हानिकारक सामग्री का परिचय है।
- भारत में बढते शहरीकरण के कारण में वाहनो का प्रदूषण खतरनाक दर बढा रहा है।

प्लास्टिक का उपयोग : प्लास्टिक हमारे वातावरण को अत्यन्त प्रदूषित कर रहा है प्लास्टिक एक ऐसी वस्तु है जो न सड सकती है और न गल सकती है। इसका प्रचलन पूरे देश में है। नदियो के किनारे प्लास्टिक कूडा, कचरा अपशिष्ट पदार्थ फेंके सडको के किनारे प्लास्टिक की पोलियो मे खाना फेंका हुआ रहता है। जिनसे जानवर बीमार होकर मर जाते है इसलिए प्लास्टिक का कम इस्तेमाल करना चाहिए।

इन सभी प्रकार के बढती वृद्धि से प्रदूषण अत्यधिक बढ रहा है जो कि मानव जीवन और वन वन्य जीव जन्तुओ के लिए हानिकारक है :- यह प्रदूषण कुछ इस प्रकार है।

* **प्रदूषण का अर्थ** → प्रदूषण (पर्यावरण) में दूषक पदार्थों के प्रवेश के कारण प्राकृतिक संतुलन में पैदा होने वाले दोष को कहते हैं। प्रदूषण पर्यावरण को और जीव जंतुओं को नुकसान पहुंचाते हैं। प्रदूषण का अर्थ – वायु, जल, मिट्टी आदि को अवांछित द्रवों से दूषित होना, जिसका सजीवों पर प्रत्यक्ष रूप से दूषित होना विपरित प्रभाव पड़ता है। तथा (पारितन्त्र) पारिस्थितिक तंत्र को नुकसान द्वारा अन्य अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ते हैं। वर्तमान समय में [पर्यावरण अवनयन] का यह एक प्रमुख कारण है।

* प्रदूषण के निम्नलिखित प्रकार हैं।

(a) वायु प्रदूषण

(b) जल प्रदूषण

(c) भूमि प्रदूषण

(D) ध्वनि प्रदूषण

(E) प्रकाश प्रदूषण

* पर्यावरण ह्रास के कारण →

भारत की पर्यावरणीय समस्याओं में विभिन्न प्राकृतिक खतरे विशेष रूप से चक्रवात और वार्षिक मानसून बाढ़, जनसंख्या वृद्धि बढ़ती हुई व्यक्तिगत खपत, औद्योगीकरण, ढांचागत विकास घटिया कृषि पद्धतियां और संसाधनों का असमान वितरण है। और इनके कारण भारत के प्राकृतिक वातावरण में अत्यधिक मानवीय परिवर्तन हो रहा है।

* **वायु प्रदूषण :** वायु प्रदूषण रसायनों सूक्ष्म पदार्थों या जैविक पदार्थ के वातावरण में मानव की भूमिका है जो मानव को या अन्य जीव जंतुओं को या पर्यावरण को नुकसान पहुंचाता है। वायु के कारण मौते और ~~श्वास~~ श्वास रोग होते हैं। वायु प्रदूषण की पहचान ज्यादातर प्रमुख स्थायी स्त्रोतो से की जाती है पर उत्सर्जन का सबसे बड़ा स्रोत मोबाइल ~~और~~ ऑटोमोबाइल्स हैं। कार्बन डाइऑक्साइड जैसी गैसे जो ग्लोबल वार्मिंग के लिए सहायक है, को हाल ही में प्राप्त मान्यता के रूप में मौसम वैज्ञानिक प्रदूषक के रूप में जानते हैं जबकि वे जानते हैं कि कार्बन-डाइऑक्साइड प्रकाश संश्लेषण के द्वारा हम को जीवन प्रदान करता है।

* **वायु प्रदूषण के कारण :** इसके पीछे सबसे बड़ा कारण प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध उपयोग होना है। पहले यह समस्या शहरों तक ही सिमीत थी, लेकिन अब यह समस्या गाँव-देहात तक बढ़ रही है। बढ़ती आबादी के कारण औद्योगिकरण में भी भारी बढ़ोतरी हुई है। लोगों को रोजगार मुहैया कराने की वजह से इंडस्ट्री से निकलने वाली जहरीली हवा को ने वायु को दूषित कर दिया है।

* **वायु प्रदूषण के प्रभाव:** वायु प्रदूषण से दीर्घकालिक स्वास्थ्य प्रभावों में हृदय रोग, फेफड़े का कैंसर और श्वसन रोग वातस्फीति शामिल हैं। वायु प्रदूषण लोगों की नसों मस्तिष्क, गुर्दे यकृत और अन्य अंगों को भी दीर्घकालिक नुकसान पहुंचा सकता है। कुछ वैज्ञानिकों को संदेह है कि वायु प्रदूषण जन्म दोष पैदा करते हैं।

* **वायु प्रदूषण की रोकथाम के कुछ उपाय:** [1] प्रदूषणकारी उद्योगों के लिए शहरी क्षेत्र से दूर अलग से क्लस्टर बनाना।

[2] ऐसी तकनीक इस्तेमाल करना जिससे धुएँ का अधिकतर भाग अवशोषित हो जाए और अवशिष्ट पदार्थ व गैसे अधिक मात्रा में वायु में न मिलने पाएं

(3) वाहनों में ईंधन से निकलने वाले धुएँ पर नियंत्रण।

उदाहरण → :

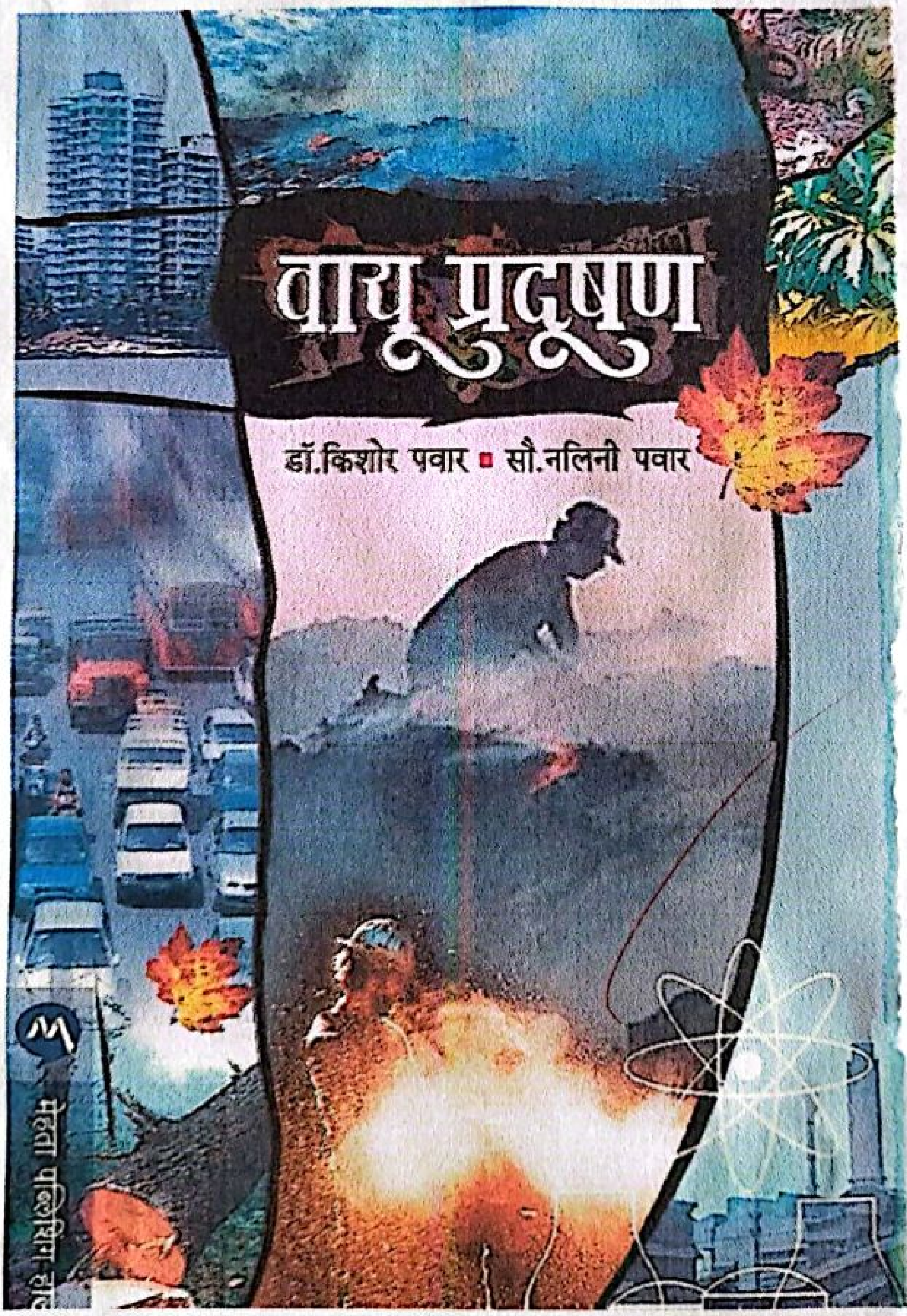

जल प्रदूषण → जल प्रदूषण का मुख्य कारण मानव या जानवरों की जैविक या किसी फिर औद्योगिक क्रियाओं के फलस्वरूप पैदा हुए प्रदूषकों को बिना किसी समुचित उपचार के सीधे जल धाराओं में विसर्जित कर दिया जाना है। जल में विभिन्न प्रकार के हानिकारक पदार्थों के मिलने से जल प्रदूषण होता है। इसमें कार्बनिक सभी प्रकार के पदार्थ जो नदियों में नहीं होने चाहिए, इस श्रेणी में आते हैं। कपड़े या बर्तन की धुलाई या जीवों या मनुष्यों के साबुन से नहाने पर यह साबुन युक्त जल शुद्ध जल में विलय हो जाता है। खाने या किसी भी अन्य तरह का पदार्थ भी जल में घुल कर उसे प्रदूषित कर देता है।

जल प्रदूषण के कारण → [1] औद्योगिक कूड़ा.

[2] कृषि क्षेत्र में अनुचित गतिविधियां.

[3] मैदानी इलाकों में बहने वाली नदियों के पानी की गुणवत्ता में कमी.

[4] सामाजिक, धार्मिक रीती - रिवाज, जैसे पानी में शव को बहाने, नहाने, कचरा फेंकने।

[5] जहाजों से होने वाला तेल का रिसाव.

जल प्रदूषण के प्रभाव → जल प्रदूषण से व्यक्ति ही नहीं अपितु पशु-पक्षी एवं मछली भी प्रभावित होते हैं। प्रदूषित जल पीने, पुनः सृजन कृषि तथा उद्योगों आदि के लिए भी उपयुक्त नहीं है। यह झीलो एवं नदियों की सुन्दरता को कम करता है। प्रदूषित जल, जलीय जीवन को समाप्त करता है तथा इसकी प्रजनन-शक्ति को क्षीण करता है।

* जल प्रदूषण के निवारण में मानव की भूमिका :

नदियों के जल प्रदूषण को रोकने एवं पर्यावरण सुधार हेतु जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगाना अति आवश्यक है। भारत के साथ-साथ विश्व के अन्य देशो को भी आगे आना होगा। नदियो के जल प्रदूषण रोकने के लिए सीवेज स्टेशनो द्वारा दूषित जल की सफाई करके सिंचाई या नदी में डालना चाहिए।

1) प्रत्येक घरो में सेप्टिक टैंक होना चाहिए।

2) जल स्त्रोतो में जानवरों की सफाई न करना।

3) व्यर्थ पदार्थों को नदी, तालाब व पोखरो में न बहाना।

4) कीटनाशी व उर्वरको का अधिकता में प्रयोग न करना।

उदाहरण →

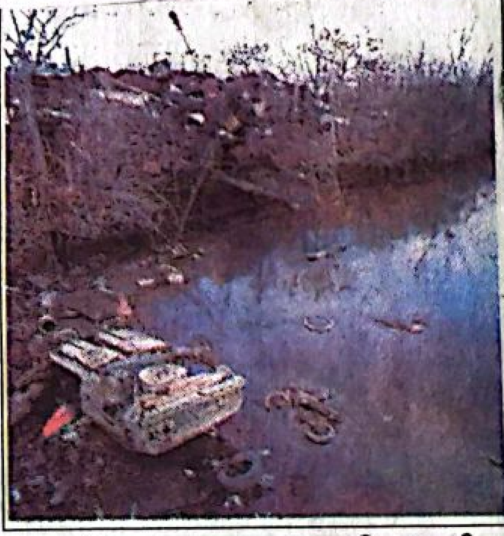

चित्र 6.8 : एक प्रदूषित नदी

जल प्रदूषण

* **ध्वनि प्रदूषण →** ध्वनि प्रदूषण किसी भी प्रकार के अनुपयोगी ध्वनियों को कहते हैं। जिससे मानव और जीव-जंतुओं को परेशानी होती है। इसमें यातायात के दौरान ~~उत्पन्न~~ उत्पन्न होने वाला शोर मुख्य कारण है। जनसंख्या और विकास के साथ ही यातायात और वाहनों की संख्या में भी वृद्धि होती। जिसके कारण यातायात के दौरान होने वाला ध्वनि प्रदूषण भी बढ़ने लगता है।

* **ध्वनि प्रदूषण के कारण :** बढ़ता शहरीकरण, परिवहन (रेल, वायु, सड़क) व खनन के कारण शोर की समस्या गंभीर रूप लेती जा रही है। विवाह, धार्मिक आयोजनों, मेलो, पार्टियों में लाउड स्पीकर का प्रयोग और डीजे के चलन भी ध्वनि प्रदूषण का मुख्य कारण है।

[1] औद्योगिक गतिविधियाँ सी एंड डी गतिविधियां, औद्योगिक प्रक्रियाएं और से मशीनरी प्रक्रियाएं, आदि शोर पैदा कर सकती है।

[2] मनोरंजन गतिविधियां तेज संगीत, आतिशबाजी आदि अत्यधिक मात्रा में शोर पैदा कर सकते हैं।

[3] शहरीकरण

[4] प्राकृतिक आपदाएं

[5] घरेलू गतिविधियां

* **ध्वनि प्रदूषण के प्रभाव:** ध्वनि प्रदूषण चिड़चिड़ापन एवं आक्रमकता के अतिरिक्त उच्च रक्तचाप, तनाव, कर्णक्ष्वेड़, श्रवण शक्ति का ह्रास, नींद में गड़बड़ी और अन्य हानिकारक प्रभाव पैदा कर सकता है इसके अलावा, तनाव और उच्च रक्तचाप स्वास्थ्य समस्याओं के प्रमुख हैं जबकि कर्णक्ष्वेड़, स्मृति खोना, गंभीर अवसाद और कई बार असमंजस के दौरे पैदा कर सकता है।

* **ध्वनि प्रदूषण के निवारण में मानव की भूमिका:**

(i) ऐसे उपकरणो का निर्माण करना जो शोर या ध्वनि की तीव्रता को कम करे।

(ii) ध्वनि अवशोषको का प्रयोग करना चाहिए।

(iii) मशीनों के साथ काम करने वाले व्यक्तियों को ध्वनि अवशोषक वस्त्रो को देना चाहिए।

(iv) पौधों को लगाकर की ध्वनि प्रदूषण को कम किया जा सकता है।

उदाहरण →

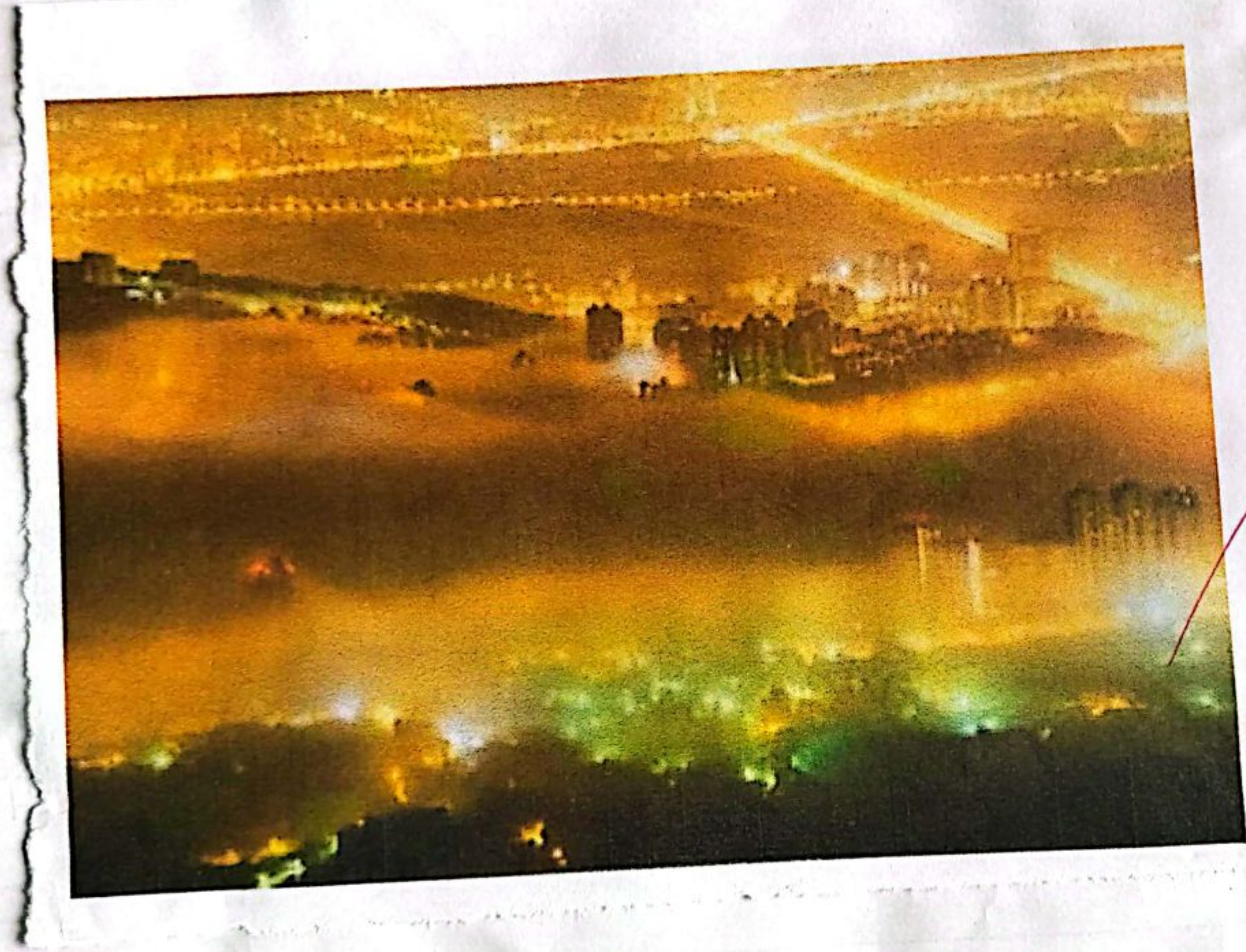

*** प्रकाश प्रदूषण** → प्रकाश प्रदूषण एक व्यापक शब्दावली है। जो विभिन्न समस्याओं को सन्दर्भित करती है, जिनसे से सभी समस्याएं कृत्रिम प्रकाश के व्यर्थ, अयोग्य, या (यकीनन) अनावश्यक इस्तेमाल से उत्पन्न होती है। प्रकाश प्रदूषण की विशिष्ट श्रेणियों में शामिल है प्रकाश, अतिचार, अति जगमगाहट, चमक प्रकाश, अव्यवस्था, और आकाश प्रदीप्ति है। सड़कों पर दिखाई देने वाली रोशनी के दुरुपयोग के कारण इस प्रकार का प्रदूषण उत्पन्न होता है, इस रोशनी और बिजली को बचाया जा सकता है, लेकिन स्ट्रीट लैंप दिन के उजाले में भी जलते है, जिनको उत्पादित करने में लाखो बैरल तेल खर्च होता है।

*** प्रकाश प्रदूषण (Light Pollution) का समाधान और उपाय:**

[1] लाइट बंद रखे जितने अधिक लोग ऊर्जा संरक्षण और प्रकाश प्रदूषण को कम करने के लिए जितनी बार संभव हो रोशनी बंद करने के महत्व को समझेंगे उतनी ही तेजी से बदलाव देखा जाएगा।

[2] कट ऑफ लाइट

[3] लाइट शील्ड्स

[4] प्रमाणित प्रकाश स्रोत का प्रयोग करें।

[5] मोशन सेंसर , [6] दूसरो को शिक्षित करें

उदाहरण →

प्रकाश प्रदूषण

* **शहरों में प्रदूषण →** पब्लिक ट्रांसपोर्ट में भारी भीड़ के चलते ज्यादातर लोग अपने वाहन से सफर करना ज्यादा पसंद करते हैं। ऐसे में सड़को पर वाहनो भी भारी संख्या के चलते जमा लग जाता है। जाम की वजह से भी वायु प्रदूषण का स्तर अब खराब श्रेणी को पार कर गया है।

* **गांवो में प्रदूषण →** प्रदूषण का असर अब सिर्फ शहरो तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि गांवो तक भी पहुँच गया है। इसमें हर साल वृद्धि हो रही है। भारतीय विष विज्ञान अनुसंधान संस्थान (I.I.T.R.) द्वारा जारी पोस्ट मानसून रिपोर्ट में स्थिति को चिंताजनक बताया गया है। साथ ही वैज्ञानिकों ने स्थिति गंभीर होने से पहले उचित कदम उठाने की सलाह दी है।

पर्यावरण प्रदूषण के निवारण में मानव की भूमिका :-

- अधिक से अधिक वृक्षारोपण किया जाए। हरे पेड़ों एवं जंगलों की कटाई पर अंकुश लगाया जाए। उद्योगों को प्रदूषण रोकने वाले यन्त्र लगाने पर ही लाइसेन्स दिया जाए। नदियों में प्रदूषित पदार्थों को मिलाने वाले उद्योगों पर रोक लगाई जाए।
- प्लास्टिक का कम से कम इस्तेमाल किया जाए और यदि प्लास्टिक का इस्तेमाल हो रहा है तो प्लास्टिक का रिसाइकल किया जाए।

वृक्ष रोपण ही केवल ऐसा साधन है जो हमारे वातावरण को ~~कुछ~~ शुद्ध व स्वच्छ रख सकता है। और यह मनुष्य के हाथ में है यदि व्यक्ति वृक्षारोपण पर जोर दें तो पर्यावरण ह्रास की समस्या समाप्त हो सकती है।

वृक्ष रोपण के लाभों में से एक यह है कि वे जीवन देने वाली ऑक्सीजन प्रदान करते हैं और जानवरों द्वारा छोड़ी गई कॉर्बनडाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं और न ही हमें ऑक्सीजन देते हैं बल्कि फल, लकड़ी फाइबर, रबर, कागज, आदि भी प्रदान करते हैं। पेड़ पशुओं और पक्षियों के लिए आश्रय का भी काम करते हैं।

- प्रदूषण के प्रभाव को कम करते हैं।

TEACHER'S SIGNATURE

Major Core

नाम ⇒ आँचल रावत

कक्षा ⇒ B.A I Year II Sem

विषय ⇒ राजनीति विज्ञान

पिता ⇒ श्री भरत सिह रावत

ह० - भरत सिंह रावत

09/10

Dt. ________

Pg. (1)

प्रश्न 1 पर्यावरण और विकास की राजनीति के बीच संबंध स्पष्ट कीजिए, पर्यावरण संरक्षण में उत्तराखण्ड महिलाओं की भूमिका का उल्लेख कीजिए।

पर्यावरण राजनीति (स्द अपतवदउमदज च्वसपजपबे उन राष्ट्रों की राजनीति है, जो वे उन राष्ट्रों को पिछड़ी हुई या अल्पविकसित बताकर राष्ट्रों को पिछड़ी हुई या उन्हें विकास के भ्रम जाल में डाला जाता है, उन्हें उनके प्राकृतिक संसाधनों को वैश्विक पूँजी से जोड़ा जाता है, और जल जंगल जमीन को बाजार अर्थव्यवस्था का अविभाज्य हिस्सा बना कर भरपूर दोहन किया जाता है।

पर्यावरण संरक्षण तथा पर्यावरण के स्वास्थ्य के सुधार से सम्बन्धित विस्तृत दर्शन विचारधारा तथा सामाजिक आन्दोलन है, पर्यावरणवाद प्राकृतिवाद प्राकृतिक पर्यावरण की कानून द्वारा रक्षा सुधार तथा पुनर्स्थापर का पक्ष लेता है, पर्यावरण को बचाने के लिए राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में रह रहे बिश्नोई पंथ के लोगों का अहम योगदान रहा है, जोधपुर के खेजड़ली गाँव में 12 सितंबर 1730 को 363 बिश्नोई समाज के लोगों ने अपनी जान देकर पेड़ों की रक्षा की थी।

पर्यावरण और राजनीति में संबंध ⟹ पर्यावरण से संबंधित मुख्यधारा के राजनीतिक सिद्धान्तों और विचारों का अध्ययन मुख्यधारा को पर्यावरणीय रुख की जाँच और कई भू-राजनीतिक स्तरों पर पर्यावरण को प्रभावित करने वाले सर्वजनिक नीति निर्धारण का और कार्यान्वयन का विश्लेषण।

Sign ....

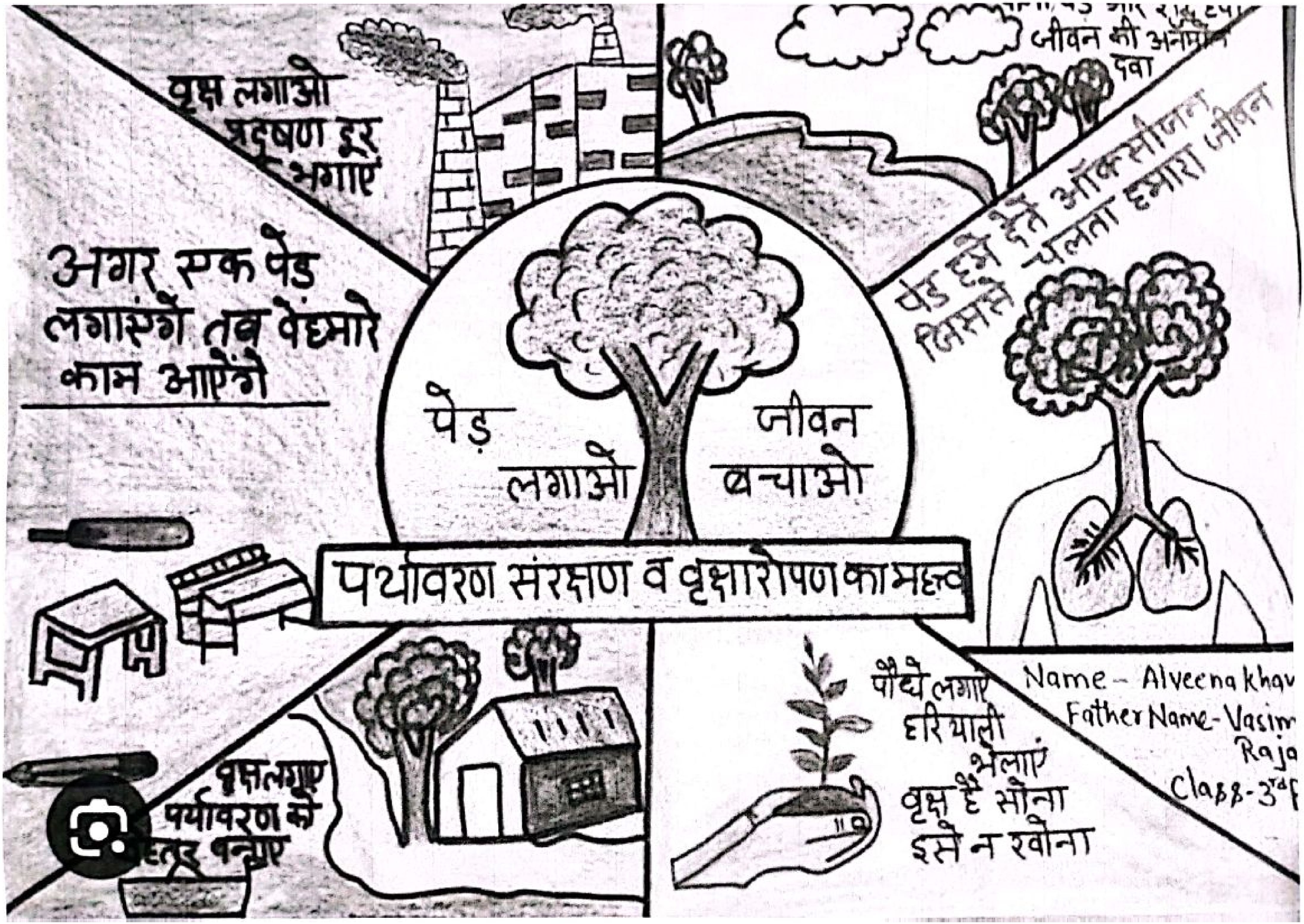
वृक्ष लगाओ प्रदूषण दूर भगाएं
जीवन की अनमोल
पेड़ हमें देते ऑक्सीजन जिससे चलता हमारा जीवन
अगर एक पेड़ लगाएंगे तब वे हमारे काम आएंगे
पेड़ लगाओ
जीवन बचाओ
पर्यावरण संरक्षण व वृक्षारोपण का महत्व
पौधे लगाएं हरियाली फैलाएं वृक्ष है सोना इसे न खोना
Name- Alveena kha
Father Name- Vasim Raja
Class- 3rd
वृक्ष लगाए पर्यावरण को

पर्यावरण राजनीति मे व्यक्ति की भूमिका → आप पुनर्चक्रण पुनः उपयोग और खाद बनाकर पर्यावरण की रक्षा के लिए कार्रवाई कर सकते है, बेहतर परिवहन विकल्प बनाना, आपके बिजली के उपयोग को कम करना: स्थानीय खरीदना: संरक्षण समूहों को दान और जहरीले रसायनो सेष बचे। आप राजनीति मे भी शामिल हो सकते है।

पर्यावरण राजनीति के प्रमुख घटक → पर्यावरण राजनीति एक व्यापक विषय है, जिसके तीन मुख्य घटक है,

(1) पर्यावरण से संबंधित राजनीति सिद्धांतों और विचारों का अध्ययन,

(2) राजनीतिक दलों और पर्यावरण

(3) आंदोलनों की जाँच।

पर्यावरण को प्रभावित करने वाले राजनिति कारको की भूमिका → देश पर्यावरण को प्रभावीत करने वाले मे राजनीति घटक की भूमिक है, देश मे राजनीतिक अस्थिरता प्रभावपूर्ण नियोजन मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जबकि राजनीति अस्थिरता अनिश्चितता का वातावरण उत्पन्न करती है, इससे उद्यमी Business संबंधित निर्णय लेने से डरता है। क्योंकि इसमे जोखिम की मात्रा आधिक होती है।

Sign ......

Dt.

Pg. (3)

पर्यावरण संरक्षण मे महिलाओ की भूमिका ⇒

ये महिलाएँ भारतीय समाज में पर्यावरण के प्रति भार· जागरूकता लाने और लोगो के लिए प्रेरणा स्रोत भी बनी हैं, खासतौर से आदिवासी महिलाओ ने वन सम्पदा प्राकृतिक संसाधनो के संरक्षण मे बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाथी हैं, आदिवासी जनजातियो की सामाजिक आर्थिक और समुदाय की रीति व्यवस्थाओ में पेड़ो का बहुत महत्व है,

उतराखण्ड मे सन रक्षासूत्र आंदोलन का भी विशेष महत्वपूर्ण हैं, इसमे महिलाओ ने रक्षासूत्र आंदोलन की शुरुआत की जिसमे उन्होने पेडो पर रक्षा धागा बाधते हुए उनकी रक्षा का संकल्प लिया, इस आंदोलन के कारण महिलाओ को पेडो से भाइयो के जैसा रिश्ता बना इस आन्दोलन के कारण वन विभाग को पेड़ काटने की कार्रवाई को रोकना पड़ा,

पर्यावरण संरक्षण में महिलायो की भूमिका ⇒

ये महिलाएँ भारतीय समाज में पर्यावरण प्रति जागरूकता लाने और लोगो के लिए प्रेरणा स्रोत भी बनी है, खासतौर से आदिवासी ने वन सम्पदा प्राकृतिक साधनो के संरक्षण मे बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभायी हैं, आदिवासी जनजातियो की सामाजिक आर्थिक और समुदाय की रीति व्यवस्थाओ में पेडो का बहुत महत्व है,

Sign ....

भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन
बिहार
2016

Dt. ____________

Pg. ____________

पर्यावरण के प्रति महिलाओं के विचार ⇒ यही नही महिएँ

पर्यावर मे आई गिरावट और प्रकृति की देखभाल करने की आवश्यकता के मुद्दे को तीव्रता से उठाने मे लगी हैं। इससे इस बात की पुष्टि होती है।

जहाँ नीति निर्माण में महिलाओ की भूमिका को क्षीण रही है। वही पर्यावरण के हित में अच्छी नितियां चनी है।

उत्तराखण्ड मे पर्यावरण मे अन्दोलन किसी बडे उद्देश्य या वैश्विक परिदृश्य को पाने के लिए नही हुए थे। बल्कि पहाड़ी महिलाओ का अपनी दैनिक जरूरतो को पुरा कर पाने के संघर्ष से हुआ था। उस समय तक पर्यावरण और पर्यावरण आंदोलन के उदय का मुख्य कारण पर्यावरणीय विनाश रहा आलोचको का कहना था कि स्वाधीनता पाने के बाद से पश्चिमी अनुभव पर आधारित आर्थिक विकास के प्रतिमानो की नकल उतारने की वजह से ही भारत मे प्राकृतिक संसाधनो पर संघर्ष तीव्र हुए दूसरा विकास योजनाओ का संसाधनो के शोषण और उस पर निर्भर लाखो ग्रामवासियो की बदहाली का जिम्मेदार है। विकास का सीधा आशय पुरुष प्रधान समाज का। विकास का का सीधा आशय पुरुष प्रधान समाज का विकास है। विकास का सीधा आशय पुरुष प्रधान समाज का।

Sign ....

फिर होगी, एक सुबह ऐसी भी
सांसें हो रही हैं कम
आओ पेड़ लगाएँ हम
ग्रीन इंडियन आर्मी सोहागपुर

INDEX

Name शिवानी Class B.A. I year Sec. .... Project समाजशास्त्र

Sr. No.	Name of the Experiment	Page No.	Date of Experiment	Date of Submission	Remarks
1	प्रस्तावना		19/12/2022		
2.	नशाखोरी / नशे की लत का अर्थ		"		
3.	युवाओं में नशाखोरी के कारण		"		
4.	भारत में नशाखोरी और युवा वर्ग		"		
5.	नशे का युवाओं के जीवन पर दुष्प्रभाव		"	07/10	
6.	युवाओं को नशे से दूर रखने के उपाय		"		
7.	निष्कर्ष।		"		
	नाम - शिवानी				
	कक्षा - BA I Semester				
	रोलन. - 26				
	पिता - श्री आनन्द सिंह				
	विषय - समाजशास्त्र				
	दिनांक - 26/12/2022				
	Sandeep				

Date 19/12/2022
Page : 01

"नशा और युवा वर्ग"

"नशा एक अभिशाप है सबको ये समझाएं,
देश का भविष्य है युवा, जीवन इनका बचाएं।"

प्रस्तावना ⇒ किसी भी देश के युवा उस देश के विकास का प्रमुख आधार होते हैं। देश का भविष्य कैसा होगा यह देश के युवाओं पर ही निर्भर होता है। युवा अगर चाहें तो अपनी कड़ी मेहनत और लगन से खुद के साथ - साथ देश को भी बुलन्दियों तक पहुंचा सकते हैं। परंतु अगर यही युवा नशे की लत का शिकार बन जाएं तो अपने साथ - साथ घर परिवार के विनाश का कारण बन जाते हैं। ऐसी स्थिति में देश का विकास भला किस प्रकार सम्भव हो सकता है।

नशाखोरी / नशे की लत का अर्थ ⇒ किसी नशीले पदार्थ के नियमित सेवन को नशाखोरी कहते हैं। जब कोई इंसान रोजाना नशीले पदार्थों का सेवन करता है। तो उसे नशे की लत लग जाती है। और नशे के बिना वह बिल्कुल भी रह नहीं पाता। इसीलिए नशे की लत को एक सामाजिक अभिशाप माना जाता है। आज देश में अमीर - गरीब, युवा - वृद्ध, स्त्री - पुरुष शिक्षित - अशिक्षित सभी इस बुरी लत

Sandeep

Teacher's Signature ....

धूम्रपान से हानि

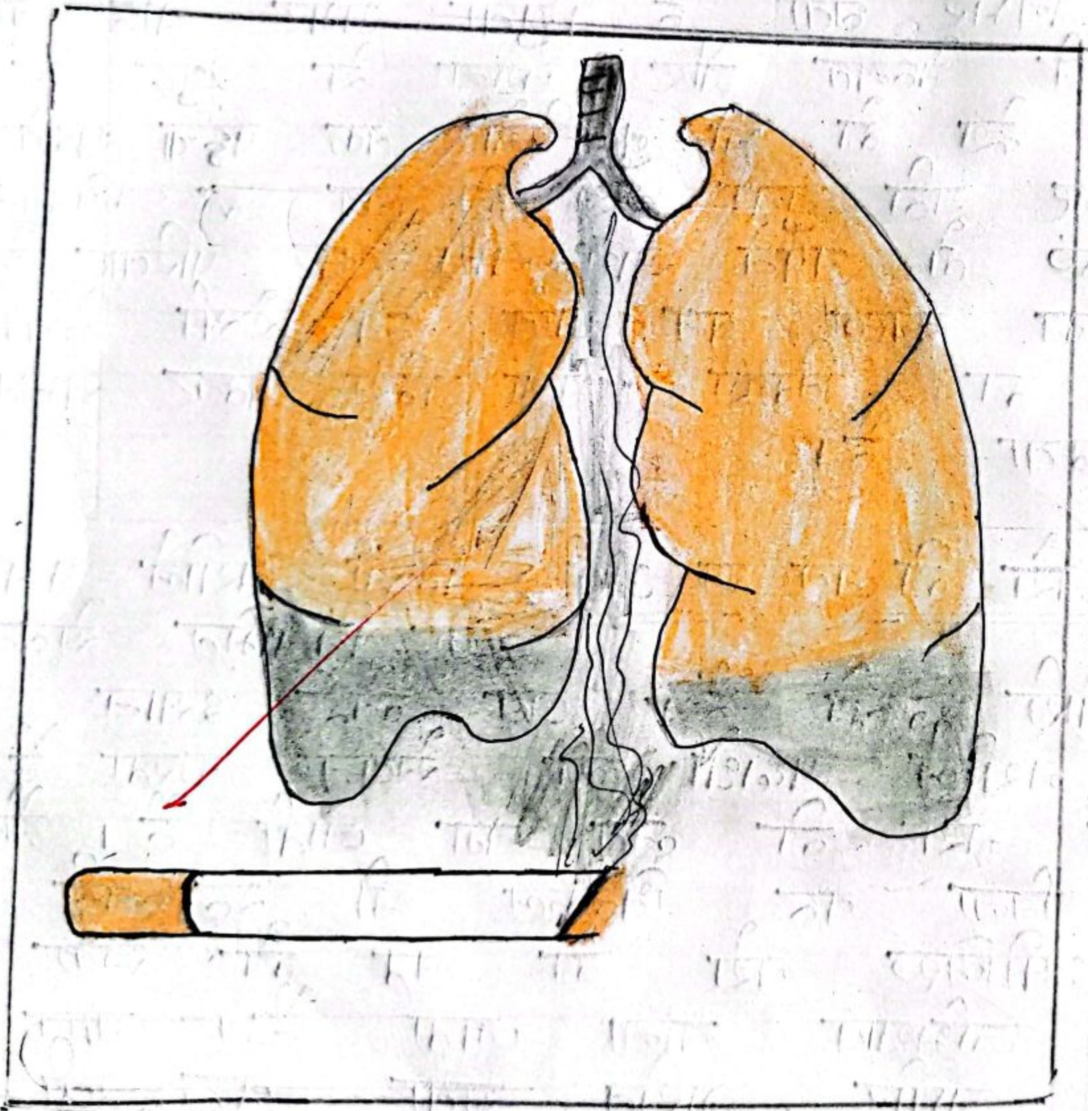

के शिकार है। यहाँ तक कि बहुत से बच्चे जो किशोरावस्था मे है वे भी नशे के आदि हो चुके है।

युवाओ मे नशाखोरी के कारण

युवाओं में नशाखोरी के बहुत से कारण है। गलत संगत में पड़कर नशा करना और फिर नशे का आदि हो जाना इसका सबसे बड़ा प्रमुख कारण है। इसके अलावा घर का तनावपूर्ण माहौल भी बच्चे को नशे की तरफ धकेलता है। घर मे स्नेह ना मिल पाना, बेरोजगारी, बार-बार कार्यों में स्नेह विफलता, काम-धंधा सही प्रकार से ना चल पाना, भविष्य की चिंता, सम्बन्धों में धोखा मिलना आदि कुछ ऐसे कारण है जिनके कारण मानसिक तनाव लेकर नशे मे पड़ना आजकल आम बात हो गयी है।

भारत में नशा और युवा वर्ग

वर्तमान समय में भारत सम्पूर्ण विश्व में सबसे अधिक युवा आबादी वाला देश है। लेकिन देश के युवा वर्ग ने नशे को एक फैशन के तौर पर अपना लिया है। नशा अब मौजमस्ती का नहीं अपितु आज की युवा पीढ़ी के लिए

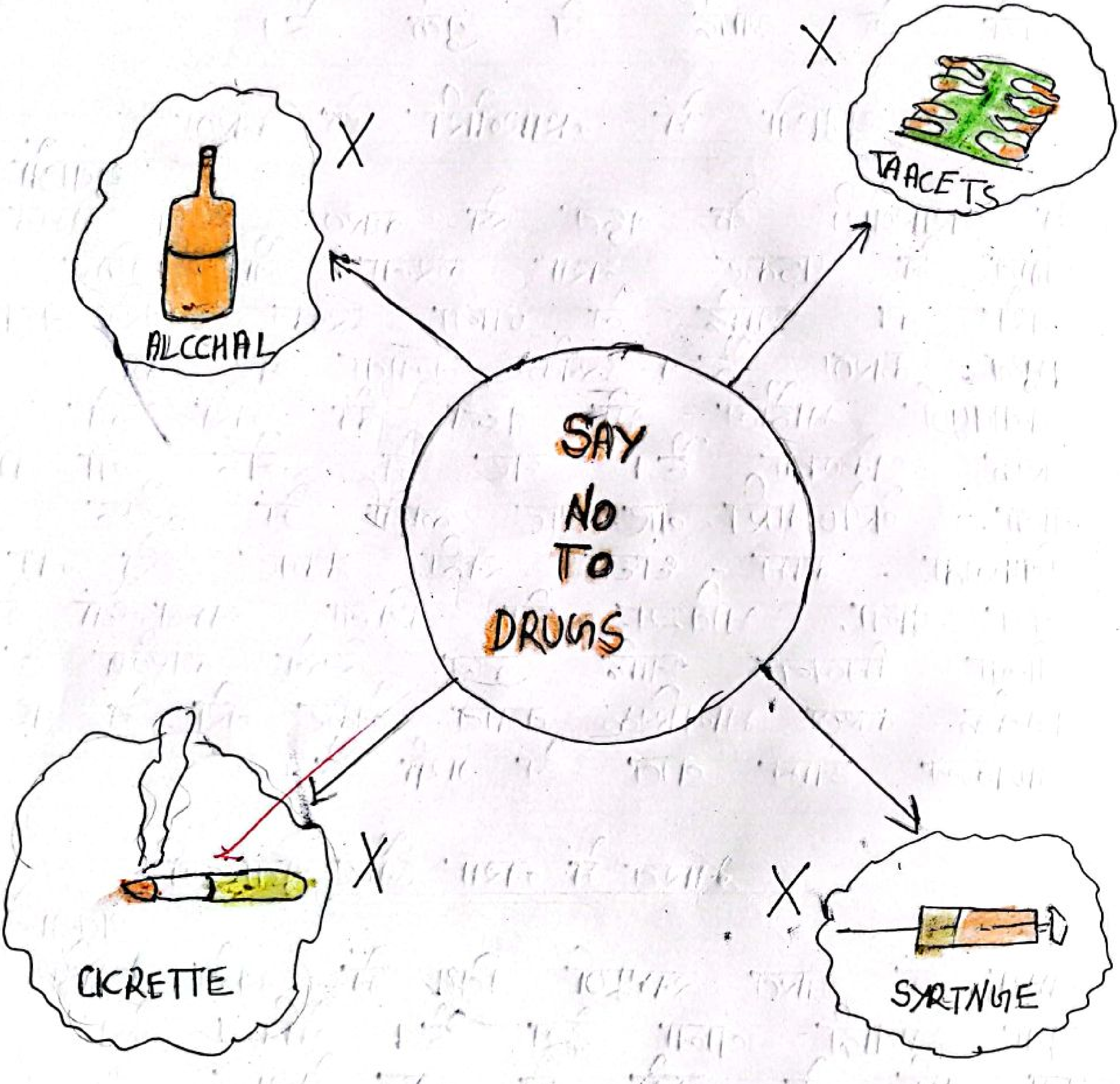
SAY NO TO DRUGS
ALCCHAL
TAACETS
CICRETTE
SYRTNGE

Date 03/..../.....
Page : ....

आवश्यकता बन गया है
सरकारी आकड़ो के हिसाब से देश की 70 से 75 % आबादी किसी न किसी प्रकार का नशा करती है, जिसमे सिगरेट, शराब व गुटखा की ओर युवा सबसे ज्यादा आकर्षित हो रहे है और तीन मे से एक युवा किसी न किसी प्रकार के नशे का आदी है। एक सर्वेक्षण के मुताबिक देश मे हर रोज लगभग 5500 युवा तम्बाकू उत्पादो के सेवन करने वालो की श्रेणी मे जुड़ रहे है। भारत मे करोड़ लोग धूम्रपान करते है, जिसमे 20 प्रतिशत महिलाएं धूम्रपान करती है एक रिसर्च के मुताबिक महिला स्मोकर्स के मामले मे भारत दुनिया मे दूसरे नंबर पर है। यह एक फैशन के रूप मे आरम्भ होता है, और फिर धीरे-धीरे आदत मे शुमार होता चला जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के मुताबिक लगभग 30 प्रतिशत भारतीय शराब का सेवन करते है। जिनमे से लगभग 13 प्रतिशत प्रतिदिन शराब का सेवन करते है शराब पीने वाले है। और इनमे से 50 प्रतिशत बुरी सिर्फ सिगरेट व शराब तक सीमित नही रहा बल्कि वर्तमान मे कोकीन, हेरोइन, गांजा, चरस, नशीली दवाइयों आदि का नशा युवाओ को तेजी अपनी गिरफ्त मे ले रहा है, भांग का नशा करने वालो की संख्या भी भारत मे

Sandeep

Teacher's Signature ....

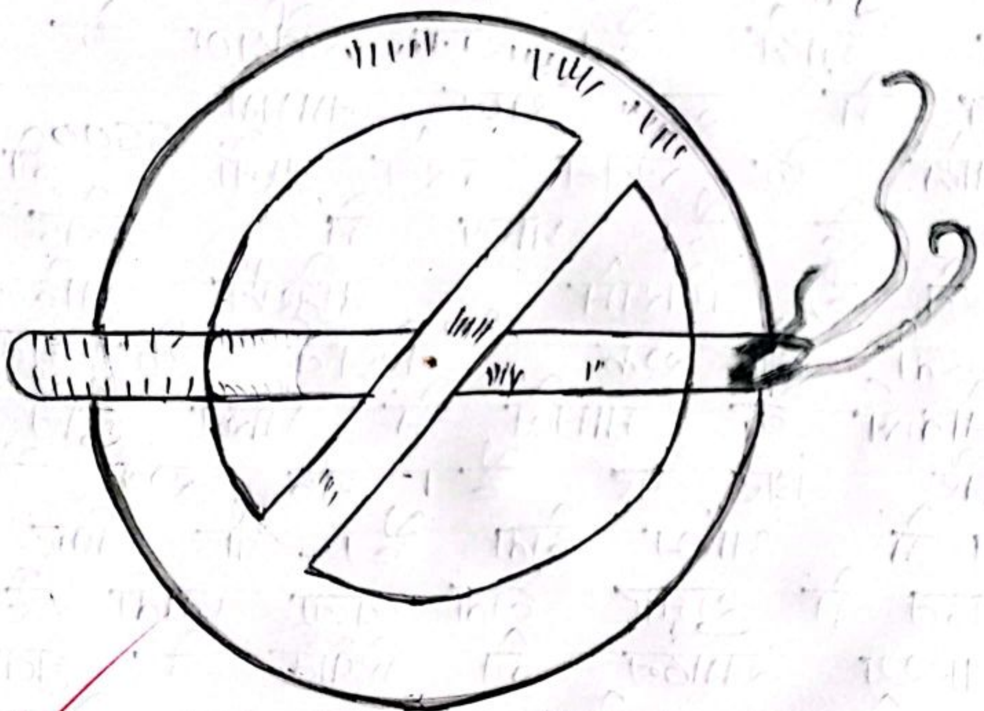

NO SMOKING SIGN

Date 09/...../........
Page : ....

बहुत अधिक है, देश में लगभग 90 से 95 लाख लोग भांग का रोज सेवन करते है। एक रिपोर्ट के मुताबिक देश के 70 फीसदी युवा नशे के आदी है।

नशे का युवाओं के जीवन पर दुष्प्रभाव ⇛ नशा एक ऐसी बुराई है जो हमारे समूल जीवन को नष्ट कर देती है। नशे की लत से पीड़ित व्यक्ति परिवार के साथ समाज पर बोझ बन जाता है। नशा स्वास्थ्य के साथ सामाजिक और आर्थिक दोनों लिहाज से ठीक नहीं है। समाज में ऐसे व्यक्ति को सम्मान की दृष्टी से नहीं देखा जाता और उसकी सामाजिक क्रियाशीलता शून्य हो जाती है। नशे के सेवन से तन और धन दोनों की हानि होती है।

आजकल शराब पीकर गाड़ी चलाते हुए एक्सीडेंट करना आम बात हो गयी है। पत्नी के साथ घरेलू हिंसा, महिलाओं के साथ यौन हिंसा, चोरी, आत्महत्या आदि अनेक अपराधों के पीछे नशा एक बहुत बड़ी वजह है।

"नशा जो करता है इंसान, बन जाता वो हैवान
ना रहती इज्जत उसकी, ना रहता धर्म ईमान।"

Sandeep

Teacher's Signature ....

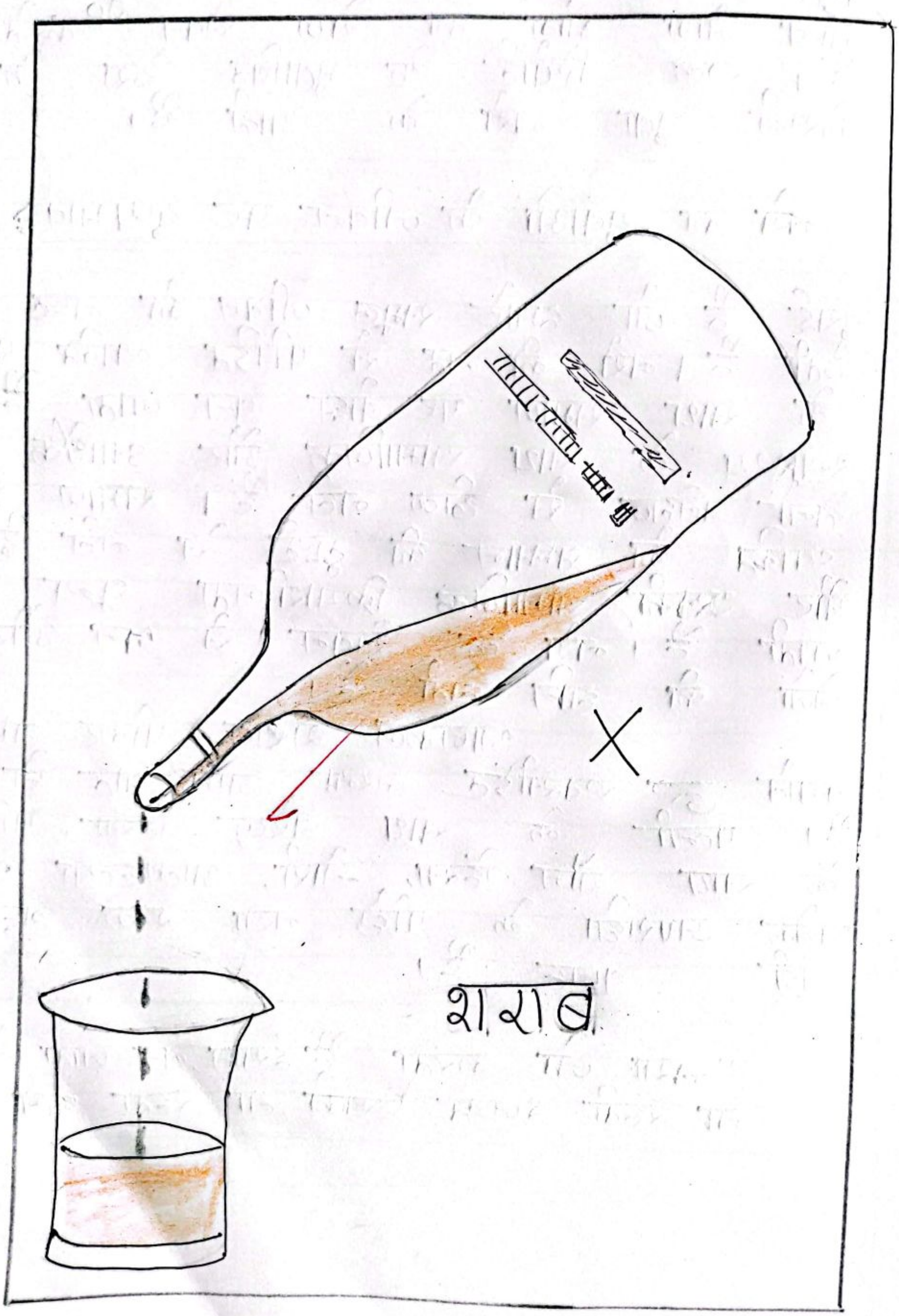
शराब

Date ....../........
Page : ....

युवाओं को नशे से दूर रखने के उपाय → नशे से बचाव के लिए सबसे जरूरी है कि युवा अपने आपको तनाव से दूर रखें और शरीर की ऊर्जा को सकारात्मक कार्यों में इस्तेमाल करें। खेल, शिक्षा इसका बेहतर ऑप्शन है। माता-पिता इस बात का विशेष ध्यान रखें की घर का माहौल और बच्चे की संगत अच्छी है। अच्छी संगत और अच्छे संस्कारों के साथ जो जीवन जीता है, नशा उसे छू भी नहीं सकता। माता-पिता को बच्चों के साथ खुल कर बात करनी चाहिए और उसे तनाव से दूर रखने का प्रयास करना चाहिए। बच्चों को अच्छे और बुरे का सही आंकलन करना चाहिए। सरकार की ओर से चलाए जा रहे नशा मुक्ति अभियान भी युवाओं को नशे से दूर रखने में सहायक है।

निष्कर्ष ⇛ जहाँ एक और नशा दीमक की तरह युवाओं की जवानी को चाट जाता है, वहीं दूसरी ओर यह सामाजिक सुरक्षा और विकास के लिए भी बहुत बड़ा खतरा है। नशा कई तरह से देश को नुकसान पहुंचा रहा है। अतः सरकार को अपने राजस्व के लालच को छोड़कर नशे के

Sandeep

Teacher's Signature ....

STOP DRUGS

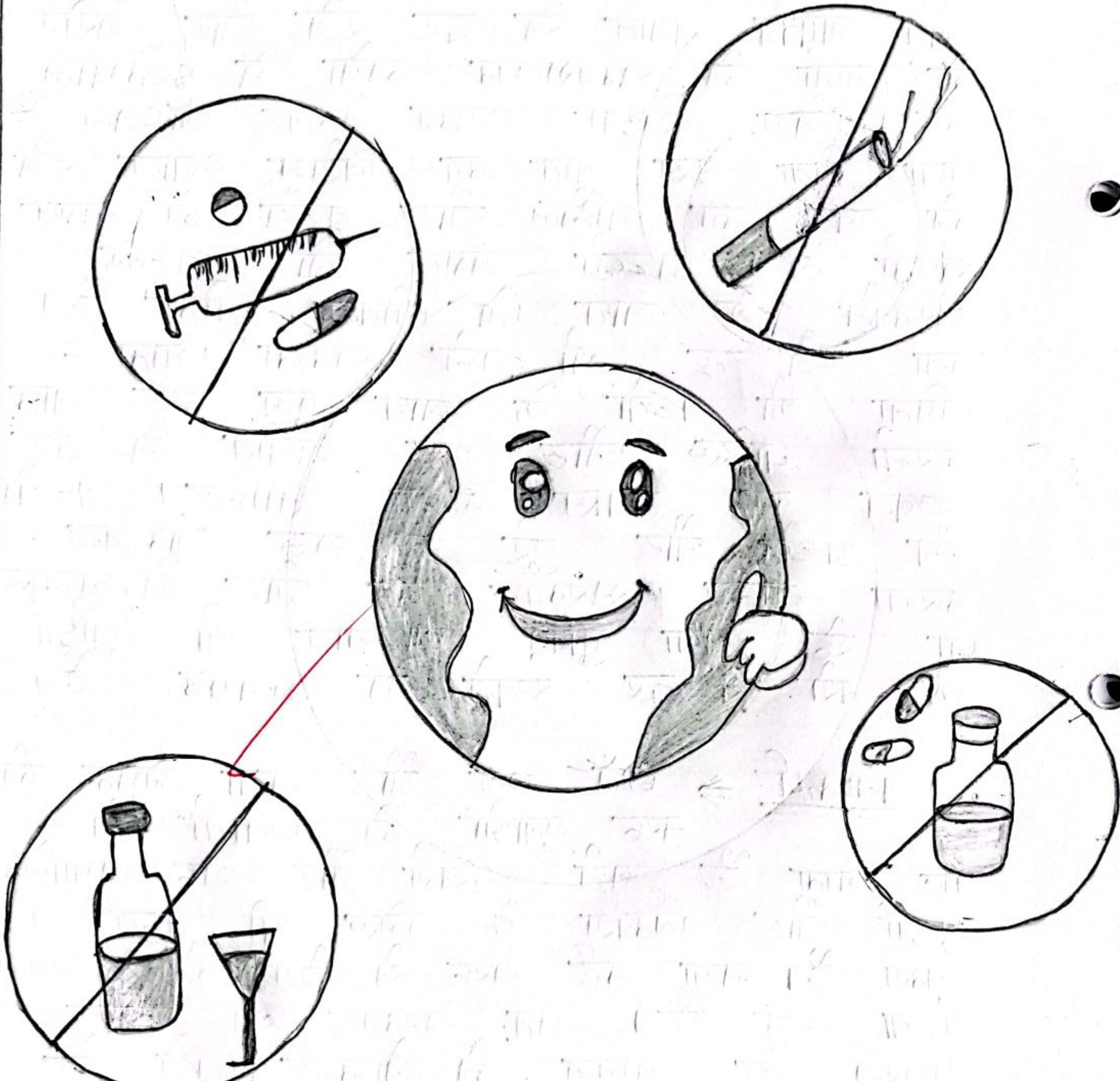

Date: 2./...../........
Page : ....

खिलाफ गंभीर कदम उठाने चाहिए।

* सब मिलकर समाज में इतना जन जागरूकता फैलाएं
नशे के कारण फिर किसी घर का चिराग ना बुझने पाए।"

* जन - जन का यही संदेश,
नशा मुक्त हो अपना देश।

भारतीय सरकार ने नशा मुक्ति से राहत पाने के लिए कई नशा मुक्ति केंद्र की स्थापना की है। देश में खुशहाली लाने के लिए नशे पर प्रतिबन्ध लगाना आवश्यक है। सामाजिक और युवा पीढ़ी में जागरूकता अत्यन्त अनिवार्य है तभी देश प्रगतिशील होगा। देश और देशवासियों के हित के लिए नशे और को जड़ से उखाड़ना होगा। तभी देश का भविष्य उज्जवल होगा।

Sandeep

Teacher's Signature ....

नाम → आँचल रावत

कक्षा → B.A I year II Sem

गाँव का नाम → खासकोटी

पिता का नाम → श्री सरत सिंह रावत

ह० → सरत सिंह रावत

मो० नं० → 746693432

विषय → समाजशास्त्र

01 ## -!- उत्तराखण्ड की सामाजिक संरचना -!-

उत्तराखण्ड के समाज मे सबसे निम्न सामाजिक स्थिति शूद्रो को प्राप्त है। शूद्रों को उत्तराखण्ड का मूल प्राचीन निवासी माना जा सकता है। कुछ इतिहासकारो ने इन्हे कोल प्रजाति माना है, उत्तराखण्ड मे मुख्य रूप से सात प्रकार की जनजाति याँ निवास करती है: भोटिया, थारू, वनरौत, राजी जौनसारी, बुकसा, जाड़ तथा हर की दून खवड़वाल।

-!- उत्तराखण्ड की संस्कृति -!-

उत्तराखण्ड की संस्कृति इस प्रदेश के मौसम और जलवायु के अनुरूप ही है। उत्तराखण्ड एक पहाड़ी प्रदेश है इसलिए यहा ठण्ड बहुत होती है। इसी ठण्ड जलवायु के आसपास ही उत्तराखण्ड की संस्कृति के सभी पहलु जैसे रहन-सहन, वेशभूषा, लोक कलाएँ इत्यादी घूमते है।

72 लोगों के इस परिवार से मिलिए

-।- संयुक्त परिवार व्यवस्था -।-

वे परिवार जिनमे अनेक पीढ़ियो के एक संबंधी साथ-साथ रहते है, एक साथ भोजन ग्रहण करते है। व सभी सदस्य द्वारा अर्जित आय आपस मे सामान्य रूप मे विभाजित करते है। व सदस्यो की आवश्यकताओ को पूर्ण करते है। उसे संयुक्त परिवार या विस्तृत परिवार कहा जाता है। प्रारम्भ से ही संयुक्त परिवार व्यवस्था भारतीय समाज की एक विशिष्ट विशेषता रही है। लेकिन समय के साथ-साथ ये व्यवस्था भी धूमिल होती जा रही है भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है। और कृषि एक ऐसा व्यवसाय है जिसमे अधिक से अधिक व्यक्तियो की आवश्यकता होती है।

-।- समाज-संरचना -।-

भारतीय समाज मे संयुक्त परिवार व्यवस्था विकसित हुई है।

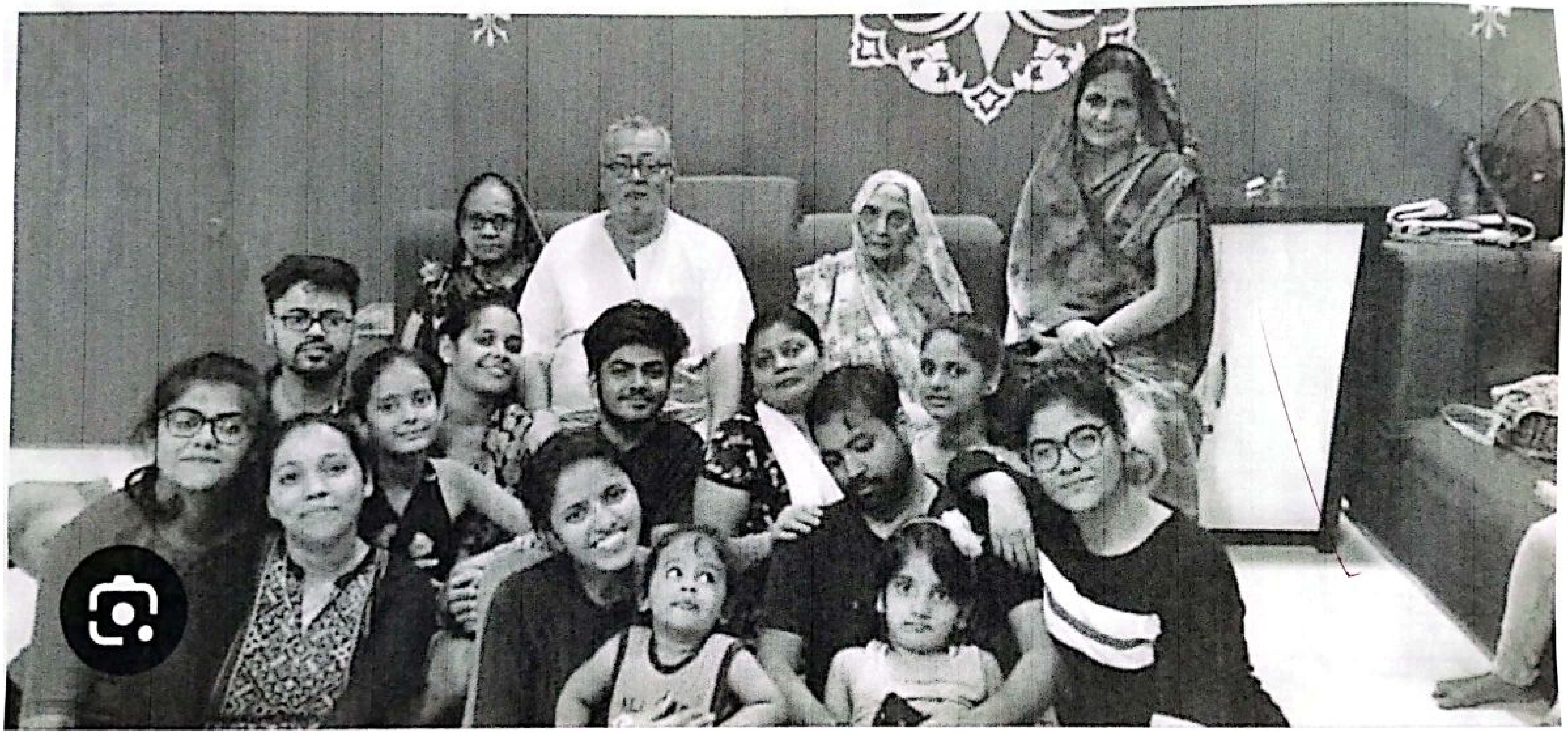

-।- जाति व्यवस्था -।-

भारतीय समाज कठोर श्रेणीबद्धता में बधाता है, समाज चाहे किसी भी श्रेणी काल खण्ड या युग का हो, उसके स्वरूप मे असमानता एवम् विभेदीकरण का किसी न किसी रूप मे पाया जाना अनिवार्यता है। सामाजिक विभेदीकरण के अन्तर्गत व्यक्तियों को अनेक वर्गों, भाषा, आयु, सगे सम्बन्धियो नातेदारो, लिंग, स्थान, विशेष इत्यादि का आधार लेकर अलग किया जाता है। समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य मे देखे तो सामाजिक स्तरीकरण वह प्रक्रिया है। जिसके द्वारा समाज के प्रत्येक वर्ग का जन्म, शिक्षा, व्यवसाय और आय के आधार पर विभाजन किया है। जाति व्यवस्था की स्थापना हमारी भारतीय समाज की आधारभूत विशेषता है। भारत मे सामाजिक स्तरीकरण की प्रक्रिया का मूल अधार जहाँ जाति और वर्ग रहे है। भारत मे हिन्दू-समाज प्राचीन से ही जाति के आधार पर अनेक श्रेणियों मे बंध रहा है।

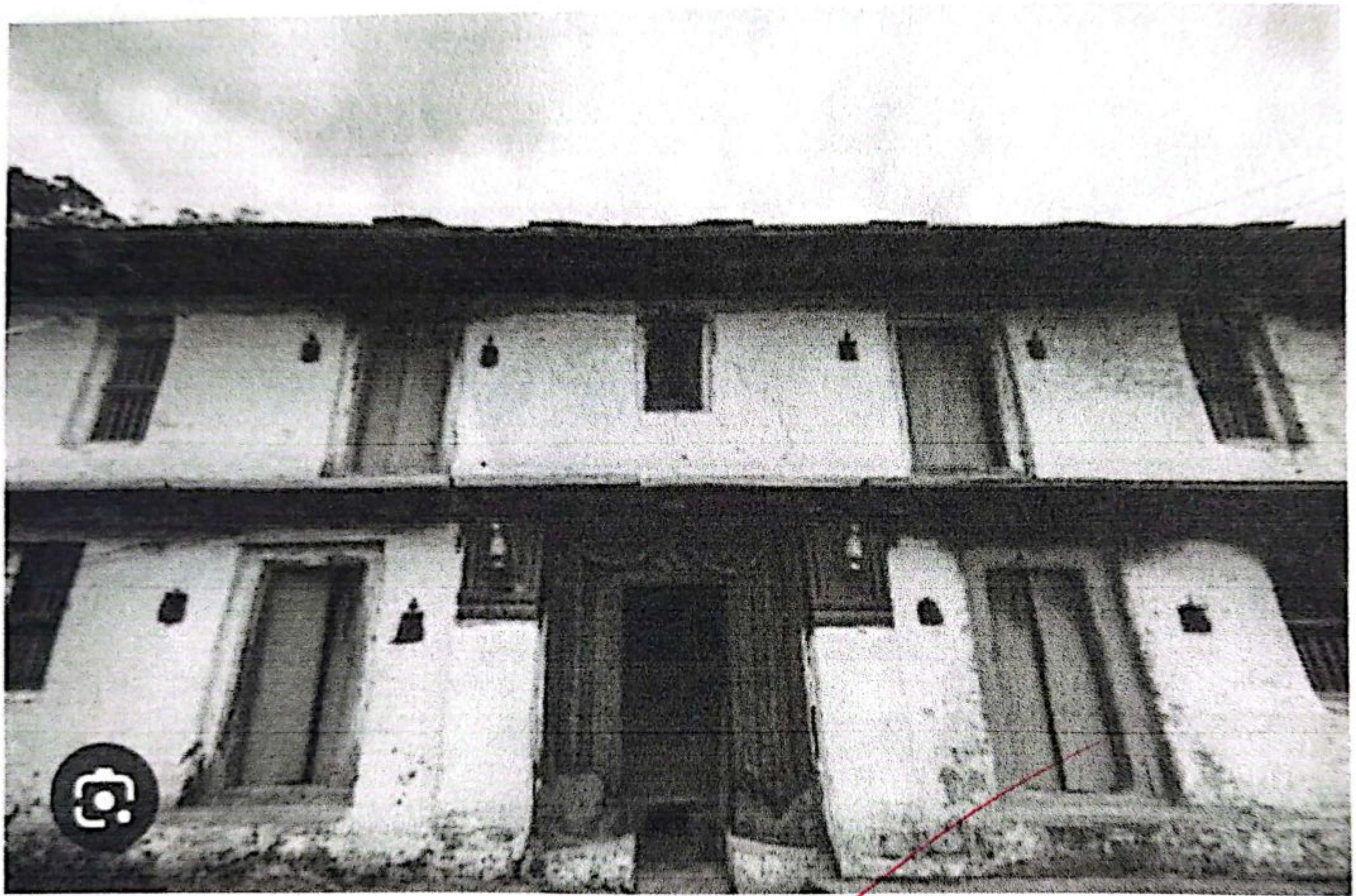

—|— संयुक्त परिवार की इतनी संरचना —|—

परिवार एक ऐसी सामाजिक संस्था है, जो आपसी सहयोग व समन्वय क्रियान्वित होती है। जिसके समस्त सदस्य आपस मे मिलकर अपना जीवन प्रेम, स्नेह एंव भाईचारे से निर्वाह करते संस्कार, मर्यादा सम्मान, समर्पण आदर अनुशासन आदि। किसी भी सुखी - संपन्न एंव खुशहाल परिवार के गुण होते है। कोई भी व्यक्ति परिवार मे ही जन्म लेता है। उसी से उसकी पहचान होती है, और परिवार से ही अच्छे - बुरे लक्षण सीखता है। परिवार सभी लोगो को जोड़े रखता है दुख - सुख मे सभी एक-दूसरे का साथ देते है।

परिवार मे सबसे बड़ा कोई धन नही, पिता से बड़ा कोई सलाहकार नही मां के आंचल से बड़ी कोई दुनिया नही, भाई से अच्छा कोई भागीदार नही, बहन से बड़ा कोई शुभचिंतक नही होता है।

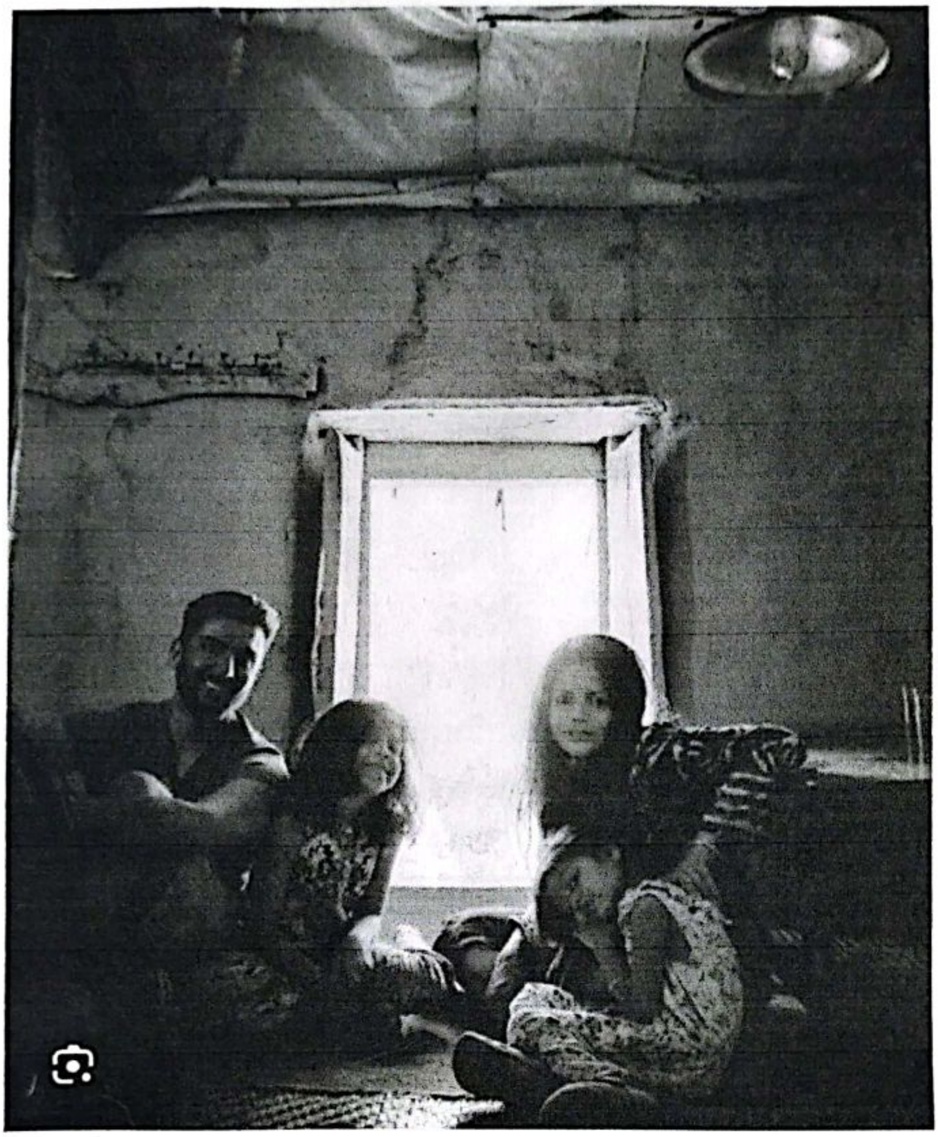

—।— संयुक्त परिवार में भागीदारी —।—

संयुक्त परिवार मे कर्ता या प्रबन्धक संयुक्त परिवार का प्रतिनिधित्व करता है।
(6) भागीदार भागीदारी फर्म के ऋणो के लिए पृथक तथा संयुक्त रूप से जिम्मेदार होता है, संयुक्त परिवार कारबार के ऋणों के लिए संयुक्त परिवार का सदस्य संयुक्त परिवार कारबार के ऋणों के लिए संयुक्त परिवार सम्पत्ति मे अपने हित की सीमा तक ही जिम्मेदार होता है।

—।— भागीदारी एंव संयुक्त परिवार में अन्तर —।—

	भागीदारी	संयुक्त परिवार
1.	भागीदारी सदैव संविदा से उत्पन्न होती है।	संयुक्त परिवार संविदा से उद्भूत नहीं होता वरन प्रास्थिति से उत्पन्न होता है।